लमहे

कुछ लमहे, जो बिखर गए थे
इस वक्त की पगडंडी पर,
अब चुबते हैं यादों के पांव में
ये कंकर बन कर !

तनहाई में, दबे पावं चले आते हैं
और धीरे से मेरे कानो में
मन-घड़ी एक कहानी सुनाते हैं !

होनी और अनहोनी
के चौराहे पर ले जा कर मुझे
एक कल्पित अतीत और भविष्य दिखाते हैं !

ये लमहे, जो बिखरे हैं
जीवन की पगडंडी पर,
अब चुबते हैं यादों के पावं में
ये कंकर बन कर !

- राजीव नंदा